IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 31, Issue 2, Series 1 (February, 2026) 104-117
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

हिमाचल प्रदेश के मण्डी जिला की देव परंपरा का इतिहास एवं लोक संस्कृति

डॉ.सुनीता देवी
सहायक आचार्य,हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,शिमला 171005

हिमाचल प्रदेश का मंडी जिला भारतीय हिमालयी क्षेत्र में स्थित एक ऐसा सांस्कृतिक भू-भाग है, जहाँ लोकधर्म, देव-परंपरा और सामाजिक जीवन के बीच घनिष्ठ एवं जीवंत संबंध देखने को मिलता है। यहाँ की देव-परंपरा केवल धार्मिक आस्था तक सीमित न होकर सामाजिक संगठन, नैतिक व्यवस्था, कृषि चक्र, पर्यावरण संरक्षण तथा लोक-संस्कृति की निरंतरता का आधार रही है। "श्री.बी.के.शर्मा के मतानुसार "मंडी जिले को प्रायः 'देवभूमि' की संज्ञा दी जाती है, क्योंकि यहाँ असंख्य लोकदेवताओं, ग्राम-देवताओं और कुलदेवताओं की मान्यताएँ प्रचलित हैं,जिनकी उत्पत्ति प्राचीन काल से मानी जाती है।"[1]

ऐतिहासिक दृष्टि से मंडी क्षेत्र प्राचीन त्रिगर्त, कुल्लू और सुकेत - मंडी जनपदों की सांस्कृतिक क्षेत्रों के प्रभाव में रहा है। यहाँ की देव-परंपरा वैदिक, पौराणिक, तांत्रिक और स्थानीय जनजातीय विश्वासों के समन्वय का परिणाम है। रोमिल थापर के शब्दानुसार "लोकदेवताओं को अक्सर शिव, विष्णु अथवा शक्ति के किसी रूप से संबद्ध किया गया, जिससे लोकधर्म का क्रमिक 'वैष्णवीकरण' एवं 'शैवीकरण' स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।"[2] यह प्रक्रिया न केवल धार्मिक परिवर्तन को दर्शाती है, बल्कि स्थानीय समाज की सांस्कृतिक अनुकूलन क्षमता को भी प्रतिबिंबित करती है।

मंडी जिले की लोकसंस्कृति–जिसमें लोकगीत, लोकनृत्य, देव-नृत्य, जागर, जगराता, देव-पूजन, देव-परिक्रमा और उत्सव शामिल हैं–देव-परंपरा से गहराई से जुड़ी हुई है। देवता केवल पूज्य सत्ता नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, निर्णय और नियंत्रण की प्रतीक संस्थाएँ भी हैं। पंचायतों से पूर्व के समय में देवता ही विवादों के निपटारे, प्राकृतिक आपदाओं की व्याख्या और सामुदायिक नैतिकता के संरक्षक माने जाते थे।

मंडी जिले की देव-परंपरा को समझने के लिए केवल ऐतिहासिक विवरण पर्याप्त नहीं है, बल्कि इसके सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक आयामों का सैद्धान्तिक विश्लेषण आवश्यक है। इस अध्ययन की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि मुख्यतः लोकधर्म,संस्कृति-कार्यात्मक सिद्धान्त, सांस्कृतिक समन्वय तथा प्रतीकात्मक नृविज्ञान पर आधारित है। लोकधर्म की अवधारणा के अनुसार "किसी भी समाज में प्रचलित धार्मिक विश्वास केवल शास्त्रीय ग्रंथों से नहीं, बल्कि स्थानीय अनुभवों, पर्यावरणीय परिस्थितियों और सामाजिक आवश्यकताओं से निर्मित होते हैं।"[3] मंडी जिले की देव-परंपरा इसी लोकधर्म की अभिव्यक्ति है, जहाँ देवता प्राकृतिक शक्तियों, ऐतिहासिक स्मृतियों और सामुदायिक आस्थाओं के प्रतीक रूप में स्थापित हैं। यहाँ देवताओं को ग्राम, क्षेत्र अथवा कुल की रक्षक सत्ता माना जाता है, जो समाज के नैतिक और व्यवहारिक जीवन को नियंत्रित करती है।

संस्कृति और धर्म समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। ब्रॉनीस्लाव मालिनोव्स्की के अनुसार "धार्मिक विश्वास सामाजिक स्थिरता और सामूहिक एकता को बनाए रखने में सहायक होते हैं।"[4] मंडी जिले में देव-परंपरा सामाजिक नियंत्रण, आपसी सहयोग, कृषि-चक्र के नियमन तथा संकटों (सूखा, महामारी, प्राकृतिक आपदा) की व्याख्या का माध्यम रही है। इस प्रकार देव-संस्थाएँ केवल आध्यात्मिक न होकर सामाजिक कार्यात्मक इकाइयाँ भी हैं।

एम.एन.श्री.निवास के सिद्धांतानुसार, "सांस्कृतिक समन्वय (Cultural Syncretism) मंडी की देव-परंपरा को समझने में विशेष रूप से उपयोगी है। यहाँ की विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएँ आपसी संपर्क के माध्यम से एक-दूसरे में समाहित हो जाती हैं।"[5] मंडी क्षेत्र में स्थानीय लोकदेवताओं का शिव, विष्णु या शक्ति से तादात्म्य स्थापित होना इसी प्रक्रिया का परिणाम है। इससे यह स्पष्ट होता है कि लोकसंस्कृति स्थिर नहीं, बल्कि गतिशील और समन्वयी प्रकृति की होती है।

प्रतीकात्मक नृविज्ञान के अंतर्गत क्लिफर्ड गीर्ट्ज़ का मत है "कि धर्म प्रतीकों की एक प्रणाली है, जो मानव को जीवन का अर्थ समझाने में सहायता करती है।"[6] मंडी जिले में देव-रथ, देव-नृत्य, देव-वाणी और उत्सव केवल अनुष्ठान नहीं, बल्कि सांस्कृतिक प्रतीक हैं, जो समाज की सामूहिक चेतना, इतिहास और मूल्य-व्यवस्था को अभिव्यक्त करते हैं। देवता यहाँ 'जीवित सांस्कृतिक प्रतीक' के रूप में लोकसंस्कृति को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचरित करते हैं।

मंडी जिले का नामकरण ऐतिहासिक रूप से यहाँ स्थापित व्यापारिक मंडियों से जुड़ा माना जाता है, जहाँ तिब्बत, लाहौल-स्पीति, कुल्लू तथा कांगड़ा क्षेत्रों के व्यापारी वस्तुओं के विनिमय हेतु एकत्रित होते थे।

इतिहासकारों के अनुसार "मंडी क्षेत्र प्राचीन त्रिगर्त और कुलूत जनपदों के सांस्कृतिक प्रभाव क्षेत्र में रहा है।"[7] मध्यकाल में यह क्षेत्र मंडी रियासत के रूप में विकसित हुआ, जिसकी स्थापना 13वीं शताब्दी में राजा बहु सेन द्वारा की गई है। सेन वंश के शासकों ने न केवल राजनीतिक स्थिरता प्रदान की, बल्कि देव-परंपरा और मंदिर स्थापत्य को भी राजकीय संरक्षण दिया। मंडी नगर को 'छोटी काशी' की संज्ञा भी इसी काल में प्राप्त हुई, क्योंकि यहाँ शिव के अनेक प्राचीन मंदिर स्थापित किए गए। मंडी रियासत में देवताओं की भूमिका केवल धार्मिक न होकर राजनीतिक और सामाजिक भी थी। राज्य के अनेक निर्णय, युद्ध, कर-व्यवस्था और भूमि संबंधी मामलों में देव-परामर्श की परंपरा प्रचलित थी। ब्रिटिश काल में मंडी एक रियासत के रूप में अस्तित्व में रही और 1948 ई. में हिमाचल प्रदेश में विलय के पश्चात यह एक प्रशासनिक जिला बना। इस ऐतिहासिक विकासक्रम ने मंडी जिले की देव-संस्कृति और लोकपरंपराओं को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भौगोलिक दृष्टि से मंडी जिला मध्य हिमालयी क्षेत्र में स्थित है तथा इसके उत्तर में कुल्लू, दक्षिण में बिलासपुर, पूर्व में किन्नौर एवं पश्चिम में कांगड़ा जिले स्थित हैं। सतलुज की सहायक नदी ब्यास मंडी जिले की जीवन-रेखा मानी जाती है, जिसके किनारे कृषि, बसावट और धार्मिक स्थल विकसित हुए। सुरजीत सिंह के शब्दानुसार,"यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियाँ–ऊँचे पर्वत, घने वन, नदियाँ और दुर्गम मार्ग–लोकदेवताओं की अवधारणा के विकास में सहायक रही हैं। प्राकृतिक शक्तियों को देव रूप में पूजने की प्रवृत्ति मंडी की देव-परंपरा में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।"[8] पर्वतीय पर्यावरण ने न केवल यहाँ की आजीविका पद्धतियों को प्रभावित किया, बल्कि धार्मिक अनुष्ठानों, मेलों और देव-यात्राओं के स्वरूप को भी निर्धारित किया। इस प्रकार मंडी जिले का ऐतिहासिक विकास और विशिष्ट भौगोलिक संरचना मिलकर एक ऐसी पृष्ठभूमि निर्मित करती है, जिसमें देव-परंपरा और लोकसंस्कृति का सुदृढ़ एवं निरंतर विकास संभव हुआ।

मंडी जिले की देव-परंपरा के उद्भव और विकास को समझने के लिए विद्वानों ने इसे प्रागैतिहासिक लोकविश्वासों, वैदिक-पौराणिक परंपराओं, तांत्रिक प्रभावों तथा स्थानीय सामाजिक-पर्यावरणीय परिस्थितियों के समन्वय के रूप में देखा है। अधिकांश विद्वान इस मत पर सहमत हैं कि हिमालयी क्षेत्र में देव-परंपरा का उद्भव प्रकृति-पूजा और जनजातीय विश्वासों से हुआ, जो कालांतर में शास्त्रीय धर्म से जुड़ती चली गई।

इतिहासकार जे. हचिन्सन और जे. फोगेल के अनुसार "पश्चिमी हिमालय की देव-परंपराएँ आर्यपूर्व काल की प्रकृति-पूजा का विकसित रूप हैं, जहाँ पर्वत, वन, नदियाँ और प्राकृतिक शक्तियाँ देवता के रूप में पूजी जाती थीं।"[9] मंडी क्षेत्र में यह परंपरा ग्राम-देवताओं और क्षेत्रीय देवताओं के रूप में विकसित हुई, जो स्थानीय समुदायों की सुरक्षा और समृद्धि से संबद्ध थे।

बी. के. शर्मा का मत है कि "मंडी जिले की देव-परंपरा का संगठित स्वरूप मध्यकालीन मंडी रियासत के उदय के साथ स्पष्ट होता है। सेन वंश के शासकों ने देवताओं को राजकीय संरक्षण प्रदान किया, जिससे देव-संस्थाएँ सामाजिक और राजनीतिक जीवन का अभिन्न अंग बन गईं।"[10] शर्मा के अनुसार देवताओं को भूमि-दान, मंदिर निर्माण और उत्सवों के माध्यम से संस्थागत स्वरूप मिला।

नृविज्ञानी डी. एन. मजूमदार देव-परंपरा को लोकधर्म की अभिव्यक्ति मानते हैं। उनके मतानुसार "लोकदेवता समाज की सामूहिक चेतना का प्रतीक होते हैं और वे सामाजिक नियंत्रण, नैतिक अनुशासन तथा परंपरागत मूल्यों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मंडी जिले में देवताओं
की पंचायत, देव-वाणी और देव-निर्णय इसी लोकधार्मिक संरचना को दर्शाते हैं।"[11]

एम. एन. श्रीनिवास की 'संस्कृतिकरण' की अवधारणा के संदर्भ में कई विद्वानों ने यह तर्क दिया है
कि "मंडी के लोकदेवताओं का शिव, विष्णु या शक्ति से तादात्म्य स्थापित होना सामाजिक-धार्मिक परिवर्तन का परिणाम है।"[12] इस प्रक्रिया में स्थानीय देवताओं को पौराणिक ढांचे में समाहित किया गया, जिससे लोक और शास्त्रीय परंपराओं का समन्वय हुआ।

हिमालयी क्षेत्रों में देव-परंपरा केवल धार्मिक विश्वास नहीं, बल्कि एक सामाजिक संस्था है। यहाँ देवता कृषि-चक्र, आपदाओं, रोग-निवारण और सामुदायिक एकता से गहराई से जुड़े हैं। इस प्रकार देव-परंपरा का विकास समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप होता रहा है।

समकालीन विद्वान ओ. सी. हांडा "देव-परंपरा के विकास को मंदिर स्थापत्य, मूर्तिकला और अनुष्ठानों के माध्यम से समझते हैं। उनके अनुसार मंडी क्षेत्र के मंदिर और देव-रथ स्थानीय सांस्कृतिक इतिहास के जीवंत साक्ष्य हैं।"[13]

मंडी जिले की देव-परंपरा का उद्भव प्राचीन लोकविश्वासों में निहित है तथा इसका विकास ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के निरंतर अंतःक्रिया का परिणाम है। मंडी जिले की लोकधार्मिक परंपरा देवी-देवताओं की बहुलता और विविधता के लिए जानी जाती है। ये लोक देवी-देवता केवल धार्मिक आस्था के प्रतीक नहीं हैं, बल्कि सामाजिक नियंत्रण, सांस्कृतिक पहचान और सामुदायिक जीवन के संरक्षक भी माने जाते हैं।

देव कमरूनाग: बी.के. शर्मा के शब्दों में "देव कमरूनाग मंडी जिले के सबसे प्रतिष्ठित लोकदेवताओं में से एक हैं। इन्हें वर्षा, जलस्रोतों और कृषि की समृद्धि का देवता माना जाता है। मान्यता है कि मंडी क्षेत्र के अधिकांश देवता कमरूनाग को देवताओं का राजा स्वीकार करते हैं।"[14] उनकी पूजा का केंद्र कमरुनाग मंदिर है, जो सुदूर रोहंडा पर्वत श्रृंखला में समुद्र तल से लगभग 3,334 मीटर की ऊंचाई पर स्थित एक पवित्र स्थान है। यह मंदिर

न केवल एक धार्मिक स्थल है, बल्कि एक तीर्थस्थल भी है जो दूर-दूर से भक्तों को आकर्षित करता है, विशेष रूप से त्योहारों और विशेष अवसरों पर। मंदिर की सबसे पूजनीय विशेषता इसकी पवित्र झील है, जिसके बारे में माना जाता है कि इसका निर्माण महाभारत काल में पौराणिक भीम ने करवाया था। स्थानीय किंवदंती के अनुसार, भीम ने यक्ष राजा की स्मृति में इस झील का निर्माण किया था, इस झील को कुमारवाह झील भी कहते हैं। जिससे इस स्थान का महाकाव्य कथाओं और आध्यात्मिक इतिहास से एक दिव्य संबंध स्थापित हुआ। यह झील कमरुनाग की पूजा का केंद्र है, जो जल के प्रतीकात्मक स्रोत और दैवीय आशीर्वाद के माध्यम के रूप में कार्य करती है। श्रद्धालु श्रद्धापूर्वक मंदिर में दर्शन करने आते हैं और अक्सर भक्ति और कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में झील में सोना और चांदी जैसी कीमती धातुएँ अर्पित करते हैं। ये अर्पण वर्षा लाने, अच्छी फसल सुनिश्चित करने और प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाए रखने की आशा से किए जाते हैं। हर वर्ष लगने वाला कमरूनाग मेला जून महीने (आमतौर पर 14-17 जून) में लगने वाला एक बड़ा और जीवंत उत्सव उनकी लोकआस्था की व्यापकता को दर्शाता है। उनका महत्व केवल पौराणिक कथाओं तक ही सीमित नहीं है; वे प्रकृति की जीवन शक्ति, विशेष रूप से जल और वर्षा के प्रतीक हैं, जो इस क्षेत्र की कृषि प्रधान जीवनशैली के लिए आवश्यक हैं। कुछ परंपराएं उन्हें महाभारत में वर्णित पौराणिक नाग वंश से जोड़ती हैं, इन सर्पों, या नागों को भूमिगत जल स्रोतों का रक्षक माना जाता है, और कामरुनाग के साथ उनका संबंध जल देवता के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है। कुछ लोग उन्हें रक्षक देवता मानते हैं जिन्होंने बाढ़, सूखा और तूफान जैसी प्राकृतिक आपदाओं से इस क्षेत्र की रक्षा करने की प्रतिज्ञा ली थी, और जो रोजमर्रा की जिंदगी में दैवीय हस्तक्षेप के सुरक्षात्मक पहलू का प्रतीक हैं।

देव मदन : देव मदन मंडी जिले के प्राचीन लोकदेवताओं में गिने जाते हैं। लोककथाओं के अनुसार "वे एक वीर योद्धा थे, जिन्हें उनकी वीरता और न्यायप्रियता के कारण देवत्व प्रदान किया गया।"[15] देव मदन की पूजा सामाजिक न्याय और सत्य की रक्षा के प्रतीक के रूप में की जाती है। हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले की समृद्ध लोक परंपराओं में देव मदन को क्षेत्रीय संरक्षक देवता के रूप में एक विशेष स्थान प्राप्त है। क्षत्रिय पराक्रम, ग्राम रक्षा और सामाजिक अनुशासन के प्रतीक के रूप में पूजे जाने वाले ये देवता स्थानीय समुदायों की नैतिक और शारीरिक अखंडता को बनाए रखने वाले गुणों का प्रतीक हैं। विद्वानों के शोध के अनुसार, देव मदन की उत्पत्ति इस क्षेत्र के सामाजिक-राजनीतिक इतिहास में निहित एक देवत्व प्राप्त वीर पुरुष के रूप में हुई थी। समय के साथ, उनके पौराणिक कार्यों और वीरतापूर्ण कारनामों का गुणगान किया गया और उन्हें दिव्य श्रद्धा में परिवर्तित कर दिया गया, जिससे वे एक लोक देवता बन गए जो आज भी इस क्षेत्र के आध्यात्मिक और सामाजिक ताने-बाने को प्रभावित करते हैं।

उनकी उपस्थिति विशेष रूप से पर्वतीय ग्रामीण क्षेत्रों में महसूस की जाती है, जहाँ उनके मंदिर अक्सर पहाड़ियों की चोटियों या गांवों की सीमाओं के निकट जैसे ऊंचे स्थानों पर बनाए जाते हैं। ये पवित्र स्थान केवल पूजा स्थल ही नहीं हैं; ये आध्यात्मिक सत्ता, सामाजिक एकता और क्षेत्रीय सुरक्षा के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में कार्य करते हैं। ग्रामीण देव मदन को अपने घरों, खेतों, पशुधन और समग्र कल्याण का रक्षक मानते हैं। उनकी भूमिका आध्यात्मिक क्षेत्र से परे है; वे प्राकृतिक आपदाओं, बीमारियों और बाहरी खतरों से रक्षक के रूप में कार्य करते हैं, जिससे सामाजिक व्यवस्था और सामुदायिक सद्भाव मजबूत होता है।

देव मदन की पूजा न केवल धार्मिक आस्था को बढ़ावा देती है बल्कि गाँव वालों के बीच नैतिक मूल्यों, अनुशासन और सामाजिक व्यवस्था को भी मजबूत करती है। भय और श्रद्धा का संतुलन सामुदायिक मानदंडों

और नैतिक आचरण के पालन को प्रोत्साहित करता है। प्रतिवर्ष, समुदाय देव मदन को समर्पित मेलों और त्योहारों के लिए एकत्रित होता है, जहाँ पारंपरिक संगीत, नृत्य और सामुदायिक भोज संबंधों को मजबूत करते हैं और उनकी सामूहिक भक्ति को पुष्ट करते हैं। ये आयोजन सामाजिक सुदृढ़ीकरण, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और देव मदन द्वारा मंडी के लोगों के जीवन में निहित सुरक्षात्मक और नैतिक अधिकार की पुष्टि के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करते हैं।

माता शिकारी देवी: शिकारी देवी मंडी जिले की प्रमुख लोकदेवी हैं, जिनका मंदिर ऊँचे पर्वतीय शिखर पर स्थित है। इन्हें शक्ति परंपरा की देवी माना जाता है। लोकविश्वास है कि माता शिकारी देवी क्षेत्र को प्राकृतिक आपदाओं और शत्रुओं से रक्षा प्रदान करती हैं। हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले के सुरम्य जंजैहली क्षेत्र में स्थित शिकारी देवी मंदिर एक प्रसिद्ध और पूजनीय आध्यात्मिक स्थल है। समुद्र तल से लगभग 3,359 मीटर (लगभग 11,000 फीट) की ऊंचाई पर स्थित यह मंदिर आसपास के पहाड़ों और हरी-भरी घाटियों के मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करता है। एक ऊंचे पर्वत शिखर पर स्थित यह मंदिर अपनी अनूठी विशेषताओं के कारण भक्तों और यात्रियों दोनों के लिए एक चुनौतीपूर्ण लेकिन सार्थक तीर्थस्थल है। इसकी सबसे विशिष्ट विशेषताओं में से एक यह है कि मंदिर में छत नहीं है, जो एक दुर्लभ वास्तुशिल्प विशेषता है और इसे अन्य पारंपरिक हिंदू मंदिरों से अलग करती है। इस खुली संरचना के बावजूद, माता शिकारी देवी की मूर्ति और गर्भगृह प्राकृतिक रूप से मौसम की मार से सुरक्षित रहते हैं, जो उनकी चमत्कारी दिव्य शक्तियों और भक्तों को हानि से बचाने की उनकी क्षमता का प्रतीक है।

माना जाता है कि माता शिकारी देवी, देवी दुर्गा का एक दिव्य रूप हैं, जो अपनी प्रचंड शक्ति और रक्षा करने वाले स्वभाव के लिए जानी जाती हैं। स्थानीय किंवदंतियों के अनुसार, "उन्होंने एक बार इसी क्षेत्र में राक्षसों का वध किया था, जिसके कारण उन्हें 'शिकारी' नाम मिला, जिसका अर्थ है [16]शिकारी" उन्हें वनों, वन्यजीवों, पशुधन और कृषि भूमि की संरक्षक और रक्षक माना जाता है। माता का मेला ज्येष्ठ माह (मई-जून) में होता है जो 3-5 दिन तक चलता है भक्त दूर-दूर से माता का आशीर्वाद लेने आते हैं, विशेषकर प्राकृतिक आपदाओं या कठिनाइयों का सामना करते समय, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि वे सच्ची मनोकामनाएं पूरी करती हैं और दिव्य सुरक्षा प्रदान करती हैं। मंदिर का शांत और भव्य वातावरण उनकी दिव्य उपस्थिति और उनके अनुयायियों की अटूट आस्था का सशक्त स्मरण कराता है।

माता बगलामुखी (बगला देवी): मंडी जिले के बगलामुखी देवी मंदिर को तांत्रिक साधना और शक्ति-उपासना का महत्वपूर्ण केंद्र माना जाता है। देवी बगलामुखी को शत्रु-नाशिनी और वाक्-सिद्धि प्रदायिनी के रूप में पूजा जाता है। हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले में पंडोह के पास बाख़ली में स्थित बगलामुखी मंदिर एक पूजनीय आध्यात्मिक स्थल है जो भक्तों और पर्यटकों को समान रूप से आकर्षित करता है। यह मंदिर न केवल अपने आध्यात्मिक महत्व के लिए बल्कि अपनी अद्भुत वास्तुकला और शांत वातावरण के लिए भी प्रसिद्ध है, जो शांति और भक्ति का माहौल बनाता है। भव्य पंडोह बांध के निकट स्थित यह मंदिर प्राकृतिक सुंदरता और दिव्य ऊर्जा का एक सामंजस्यपूर्ण मिश्रण प्रस्तुत करता है, जो इसे शांति और आध्यात्मिक उत्थान की तलाश करने वालों के लिए एक अनिवार्य दर्शनीय स्थल बनाता है। दुर्गा की दस महाविद्याओं में से एक देवी बगलामुखी को समर्पित, इस मंदिर का धार्मिक महत्व बहुत अधिक है। "देवी बगलामुखी को एक शक्तिशाली देवी के रूप में पूजा जाता है जो अपने भक्तों को शक्ति, वाणी, विजय और जीवन में आने वाली बाधाओं को दूर करने की क्षमता प्रदान करती हैं। कानूनी मामलों, व्यावसायिक प्रयासों या व्यक्तिगत संघर्षों में सफलता की कामना करने वाले लोग

अक्सर उनकी पूजा करते हैं।"[17] मंदिर का पवित्र वातावरण और पुजारियों और श्रद्धालुओं की भक्ति प्रार्थना, ध्यान और चिंतन के लिए अनुकूल वातावरण बनाती है।

हाल के वर्षों में इस आध्यात्मिक स्थल तक पहुंचना काफी आसान हो गया है। 800 मीटर लंबी रोपवे अब मंदिर को सीधे पंडोह बांध से जोड़ती है, जो चंडीगढ़-मनाली राजमार्ग पर स्थित है। जो एक मनोरम और सुंदर यात्रा है। यह मनोरम यात्रा न केवल मंदिर तक पहुंच को आसान बनाती है, बल्कि समग्र आध्यात्मिक अनुभव को भी बढ़ाती है। जैसे-जैसे आगंतुक पवित्र मंदिर की ओर बढ़ते हैं, वे ताजी पहाड़ी हवा, हल्की हवा और मनमोहक दृश्यों का आनंद ले सकते हैं। मंदिर का शांत वातावरण और इसके आसपास की मनमोहक प्राकृतिक सुंदरता इसे ध्यान, प्रार्थना और देवी बगलामुखी की दिव्य उपस्थिति का अनुभव करने के लिए एक आदर्श स्थान बनाती है। वर्ष भर मंदिर में विभिन्न धार्मिक समारोह, त्योहार और अनुष्ठान आयोजित होते रहते हैं, जो पूरे क्षेत्र से भक्तों को आकर्षित करते हैं और इसके आध्यात्मिक महत्व को और भी बढ़ाते हैं।

भीमाकाली मंदिर: हिमाचल प्रदेश के मंडी में स्थित भीमकाली मंदिर इस क्षेत्र की समृद्ध आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत का जीवंत प्रमाण है। शहर के मध्य में स्थित यह पूजनीय मंदिर शक्ति पूजा का एक महत्वपूर्ण केंद्र है, जहाँ असंख्य भक्त दिव्य आशीर्वाद और आध्यात्मिक शांति की तलाश में आते हैं। देवी भीमकाली को समर्पित यह मंदिर, जो दिव्य स्त्रीत्व का उग्र और रक्षक अवतार हैं, शक्ति के असीम बल और पालन-पोषण दोनों का प्रतीक है। 'भीम' नाम उनकी अपार शक्ति को दर्शाता है, जो महाभारत के पौराणिक नायक भीम की याद दिलाता है और अटूट शक्ति और दृढ़ता का प्रतीक है। प्राचीन काल से ही यह क्षेत्र शक्ति पूजा का केंद्र रहा है, जहाँ देवी को समुदाय की संरक्षक और दिव्य ऊर्जा का अवतार माना जाता है।

भक्तों के लिए, देवी भीमकाली मात्र एक देवी नहीं हैं वे उपचार, सुरक्षा और आशा का स्रोत हैं। लोग व्यक्तिगत कष्टों से मुक्ति, प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा और जीवन में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए उनके पास आते हैं। विशेषकर नवरात्रि के दौरान, जो देवी को समर्पित एक त्योहार है, मंदिर जीवंत अनुष्ठानिक गतिविधियों, रंगारंग उत्सवों और सामुदायिक समारोहों का केंद्र बन जाता है। भक्त विशेष पूजा-अर्चना,यज्ञ और भक्ति गीत गाते हैं, ये सभी उनकी दिव्य कृपा को प्राप्त करने के उद्देश्य से किए जाते हैं। इन त्योहारों के दौरान वातावरण आध्यात्मिक उत्साह से भर जाता है, जो गहरी आस्था और सांस्कृतिक गौरव को दर्शाता है।

वास्तुकला की दृष्टि से भीमकाली मंदिर तंत्र, मंत्र और स्थानीय लोक परंपराओं का एक सामंजस्यपूर्ण मिश्रण है। इसकी संरचना और अनुष्ठानिक प्रथाएं गूढ़ और स्वदेशी तत्वों के संश्लेषण को प्रकट करती हैं, जो मंदिर की आध्यात्मिक भूमिका को रहस्यमय और सांसारिक के बीच सेतु के रूप में दर्शाती हैं। यह मंदिर मंडी में देव परंपरा का भी एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, जहां भीमकाली कई स्थानीय देवताओं में केंद्रीय स्थान रखती हैं। उन्हें देवी-देवताओं के समूह की सर्वोच्च देवी के रूप में माना जाता है, जो समुदाय की सामूहिक आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक हैं।

सांस्कृतिक रूप से यह मंदिर लोक कलाओं और परंपराओं का एक जीवंत भंडार है। देवी को समर्पित गीत, पारंपरिक नृत्य और कथावाचन सत्र इस मंदिर के उत्सवों का अभिन्न अंग हैं, ये कलाएँ न केवल भक्तिमय भेंट के रूप में कार्य करती हैं, बल्कि ऐतिहासिक कथाओं, नैतिक शिक्षाओं और सामुदायिक मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का माध्यम भी हैं। प्रतीकात्मक रूप से, "देवी भीमकाली नारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं–उनका उग्र रूप न्याय, शक्ति और सुरक्षात्मक ऊर्जा का प्रतीक है।"[18] विशेषकर भूकंप और बाढ़ जैसी

प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित क्षेत्रों में, उनसे स्वास्थ्य, न्याय और सुरक्षा के लिए प्रार्थना की जाती है। देवी की सुरक्षात्मक दृष्टि भक्तों को आश्वासन और दृढ़ता प्रदान करती है।

नवाही माता मंदिर: नवाही माता मंडी जिले की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संरचना में गहराई से समाई एक प्राचीन लोक देवी हैं, विशेष रूप से सरकाघाट क्षेत्र के रमणीय नवाही गांव में उनकी पूजा की जाती है। उनकी उत्पत्ति स्थानीय ग्राम देवी परंपरा से जुड़ी है, जहां माना जाता है कि उन्होंने स्वयं को स्थानीय भाषा में स्वयंभू के रूप में इस क्षेत्र में प्रकट किया था। स्वयंभू उपस्थिति के कारण नवाही माता उन पूजनीय देवियों में शुमार हैं जिन्हें स्वाभाविक रूप से दिव्य माना जाता है, मानो वे धरती से ही प्रकट हुई हों। उनकी पूजा शाक्त परंपरा से गहराई से जुड़ी हुई है, जो दिव्य स्त्री ऊर्जा का सम्मान करने वाला एक संप्रदाय है, और उन्हें एक शक्तिशाली, पालन-पोषण करने वाली शक्ति के रूप में महत्व देता है। प्रारंभ में, नवाही माता की पूजा साधारण ढंग से की जाती थी–शायद एक साधारण पत्थर या बिना सजावट वाले स्थान पर–जो स्थानीय समुदाय के लिए दिव्य सुरक्षा के एक पवित्र प्रतीक के रूप में कार्य करता था। समय के साथ, जैसे-जैसे उनका महत्व बढ़ता गया, उनके सम्मान में एक औपचारिक मंदिर स्थापित किया गया। मात्र एक स्थान या प्रतीक से एक समर्पित पूजा स्थल में यह विकास एक रक्षक देवी और कुलदेवी के रूप में उनके महत्व को रेखांकित करता है। यह मंदिर सामुदायिक सभाओं, अनुष्ठानों और त्योहारों का केंद्र बन गया, जिससे ग्रामीणों के आध्यात्मिक जीवन में उनका स्थान और भी मजबूत हो गया।

देवी का प्रभाव स्थानीय संस्कृति और लोक परंपराओं में व्याप्त है। उनकी कहानियां और किंवदंतियां लोकगीतों, भजनों (भक्ति गीत), जागरों (रात भर चलने वाली आध्यात्मिक सभाओं) और पीढ़ियों से चली आ रही मौखिक कथाओं के माध्यम से संरक्षित हैं। ये सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ न केवल भक्ति के कार्य के रूप में कार्य करती हैं बल्कि उनकी किंवदंतियों, गुणों और सुरक्षात्मक शक्तियों को प्रसारित करने का एक माध्यम भी हैं। त्योहारों के दौरान पहने जाने वाले पारंपरिक परिधान, नगाड़ा और ढोल जैसे वाद्ययंत्रों के साथ मिलकर उनके उत्सवों को जीवंत बनाते हैं। इन अवसरों पर किए जाने वाले नृत्य समुदाय की एकता और सांस्कृतिक निरंतरता का प्रतीक हैं, जो लोगों की सामूहिक पहचान में उनके महत्व को और मजबूत करते हैं।

एस.आर.हरनोट के शब्दानुसार "अपनी धार्मिक भूमिका से परे, नवाही माता एक सामाजिक एकता की भूमिका निभाती हैं। वे जाति और वर्ग भेदों से परे हैं, एक नैतिक सत्ता और सामुदायिक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती हैं।"[19] ग्रामीण विवादों के समाधान, सामाजिक निर्णयों के मार्गदर्शन और अनुशासन बनाए रखने के लिए उनकी ओर देखते हैं। एक मातृ स्वरूप, रक्षक और दिव्य न्यायाधीश के रूप में पूजनीय ऐसा माना जाता है कि वे अपने भक्तों से सपनों, संकेतों और आवाजों के माध्यम से संवाद करती हैं और प्राकृतिक आपदाओं, बीमारियों या अन्य दुर्भाग्य की चेतावनी देती हैं। ऐसे संदेश समुदाय के लिए एक सर्वव्यापी संरक्षक और नैतिक दिशा-निर्देशक के रूप में उनकी भूमिका को और मजबूत करते हैं।

पंचवक्त्र महादेव मंदिर: हिमाचल प्रदेश के मंडी में ब्यास और सुकेती नदियों के पवित्र संगम स्थल पर स्थित पंचवक्त्र महादेव मंदिर शहर का सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक केंद्र है। आर.सी.डोगरा के मतानुसार "यह पूजनीय मंदिर "भगवान शिव को समर्पित है, जिनकी यहां पंचवक्त्र रूप में पूजा की जाती है, जिसका अर्थ है पांच मुखों वाला ये पांच मुख शिव के दिव्य स्वरूप के विभिन्न पहलुओं का प्रतीक हैं"[20] जो उनकी सर्वव्यापकता, रक्षा शक्ति और ब्रह्मांड में संतुलन बनाए रखने की क्षमता को दर्शाते हैं। प्रत्येक मुख ईशान, तत्पुरुष, अघोर,

वामदेव और सद्योजात शिव के ब्रह्मांडीय व्यक्तित्व के एक विशिष्ट पहलू का प्रतिनिधित्व करता है, जो सामूहिक रूप से उनके संरक्षक और उपचारक के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है।

मंदिर की उत्पत्ति प्राचीन काल से मानी जाती है और यह लंबे समय से आध्यात्मिक शांति और दिव्य आशीर्वाद की तलाश करने वाले भक्तों के लिए एक प्रमुख तीर्थस्थल रहा है। दो पवित्र नदियों के इस संगम पर स्थित यह स्थल गहरा आध्यात्मिक महत्व रखता है, और माना जाता है कि यह दिव्य ऊर्जाओं का एक शक्तिशाली केंद्र है। सदियों से, दूर-दूर से तीर्थयात्री सुरक्षा, न्याय और स्वास्थ्य लाभ की कामना करते हुए इस मंदिर में आते रहे हैं।

मंदिर के आध्यात्मिक जीवन में अनुष्ठानों का महत्वपूर्ण योगदान है। भक्त नियमित रूप से जलभिषेक (जल अर्पण), रुद्राभिषेक (शिव की प्रतिमा का स्नान) जैसे पारंपरिक अनुष्ठान करते हैं और भगवान शिव को समर्पित महाशिवरात्रि की रात विशेष प्रार्थना करते हैं। ऐसा माना जाता है कि ये अनुष्ठान दिव्य आशीर्वाद प्राप्त करने, मन और आत्मा को शुद्ध करने और शिव के सुरक्षात्मक स्वरूप को मजबूत करने में सहायक होते हैं।

धार्मिक महत्व के अलावा, पंचवक्त्र महादेव मंदिर मंडी का एक सांस्कृतिक प्रतीक है। यह क्षेत्र की स्थानीय परंपराओं, लोककथाओं और पहचान को समाहित करता है और आस्था एवं सामुदायिक एकता का प्रतीक है। मंदिर की वास्तुकला, अनुष्ठान और कहानियां मंडी की सांस्कृतिक संरचना में रचे-बसे हैं, जो इसे न केवल एक आध्यात्मिक स्थल बनाती हैं, बल्कि शहर की समृद्ध विरासत का एक जीवंत प्रमाण भी हैं।

भूतनाथ मंदिर: हिमाचल प्रदेश के सुरम्य शहर मंडी में स्थित भूतनाथ मंदिर, इस क्षेत्र में भगवान शिव को समर्पित सबसे प्राचीन और सबसे पूजनीय तीर्थस्थल है। यह प्राचीन मंदिर न केवल एक आध्यात्मिक केंद्र है, बल्कि मंडी की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत का भी प्रतीक है। स्थानीय किंवदंतियों और लोककथाओं के अनुसार, "इस मंदिर की स्थापना 16वीं शताब्दी में राजा अजय सेन के शासनकाल में हुई थी। ऐसा कहा जाता है कि राजा को एक दिव्य स्वप्न आया था, जिसमें उन्हें शहर और उसके निवासियों के रक्षक के रूप में एक पवित्र स्थान का निर्माण करने का निर्देश दिया गया था। ऐसा माना जाता है कि यह स्वप्न स्वयं भगवान शिव का एक दिव्य संदेश था, जिसने राजा को उसी स्थान पर मंदिर का निर्माण करने के लिए प्रेरित किया जहाँ उन्हें दिव्य दर्शन हुए थे।"[21]

'भूतनाथ' नाम का अर्थ 'आत्माओं के स्वामी' या 'तत्वों के स्वामी' है, जो पांच मूलभूत तत्वों पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश के स्वामी के रूप में शिव की ब्रह्मांडीय भूमिका पर बल देता है। यह नामकरण शिव की सार्वभौमिक संप्रभुता और ब्रह्मांड को आकार देने वाली प्राकृतिक शक्तियों पर उनके अधिकार को दर्शाता है। सदियों से भूतनाथ मंडी के संरक्षक देवता के रूप में जाने जाते हैं, जो स्थानीय समुदाय को समृद्धि, शांति और सुरक्षा का आशीर्वाद प्रदान करते हैं। मंदिर की वास्तुकला पारंपरिक हिमाचली शिल्प कौशल का प्रमाण है, जिसमें जटिल लकड़ी का काम और पत्थर की नक्काशी पौराणिक कथाओं और आध्यात्मिक प्रतीकों को दर्शाती है।

धार्मिक रूप से भूतनाथ शिव का बहुआयामी महत्व है। उनकी पूजा दिव्य रक्षक, न्याय के दाता और कठिनाइयों का सामना कर रहे लोगों के संकटमोचक के रूप में की जाती है। शैव परंपरा से परे, भूतनाथ को एक लोक देवता के रूप में भी पूजा जाता है, जो स्थानीय लोगों के दैनिक जीवन में गहराई से समाया हुआ है। मंदिर का प्रभाव लोक परंपराओं में भी दिखाई देता है, जहाँ शिव के दिव्य हस्तक्षेपों से जुड़ी कहानियाँ और किंवदंतियाँ पीढ़ियों से चली आ रही हैं। लोकगीत और नृत्य अक्सर देवता की दयालुता और रक्षा शक्ति का गुणगान करते

हैं। मंदिर की उपस्थिति मंडी निवासियों के बीच सामुदायिक भावना और सांस्कृतिक पहचान को बढ़ावा देती है, और त्योहारों, सामाजिक समारोहों और आध्यात्मिक अनुष्ठानों का केंद्र बिंदु है।

संरक्षक देवता के रूप में, भूतनाथ मंडी के लोगों में भक्ति और सांस्कृतिक गौरव की भावना को प्रेरित करते रहते हैं, और यह सुनिश्चित करते हैं कि उनकी पवित्र विरासत पीढ़ियों तक बनी रहे।

त्रिलोकिनाथ मंदिर: हिमाचल प्रदेश के सुरम्य मंडी जिले में स्थित त्रिलोकिनाथ मंदिर, इस क्षेत्र की गहरी आध्यात्मिक जड़ों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रमाण है। यह प्राचीन और पूजनीय मंदिर भगवान शिव को समर्पित है, जिन्हें स्थानीय रूप से त्रिलोकिनाथ के रूप में पूजा जाता है जिसका अर्थ है 'तीनों लोकों के स्वामी' स्वर्ग, मृत्यु और पाताल लोक। "मंदिर का महत्व केवल वास्तुकला तक ही सीमित नहीं है, यह पहाड़ों के आध्यात्मिक सार और स्थानीय समुदायों की अटूट आस्था का प्रतीक है।"[22]

किंवदंतियाँ और लोक परंपराएँ मंदिर की उत्पत्ति की एक आकर्षक कहानी बयां करती हैं। ऐसा माना जाता है कि यह मंदिर स्वयंभू है, बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के प्राकृतिक रूप से प्रकृति से उत्पन्न हुआ है। स्थानीय मान्यता के अनुसार, शिव यहाँ एक प्राकृतिक शक्ति के रूप में प्रकट होते हैं एक सर्वव्यापी ऊर्जा जो पहाड़ों, चट्टानों और नदियों में निवास करती है। यह धारणा हिमालयी क्षेत्र में शैव लोक देवता परंपराओं के विकास को दर्शाती है, जहाँ प्रकृति को ही दिव्य माना जाता है।

त्रिलोकिनाथ मंदिर का धार्मिक महत्व गहरा और बहुआयामी है। भक्त मानते हैं कि शिव एक दिव्य रक्षक हैं, जो समुदाय को विपत्तियों और नकारात्मक शक्तियों से बचाते हैं। न्याय के देवता के रूप में, शिव का आशीर्वाद धर्म और नैतिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए मांगा जाता है। मंदिर को आध्यात्मिक और शारीरिक दोनों तरह से उपचारक और प्राकृतिक आपदाओं या व्यक्तिगत दुर्भाग्य जैसी विपत्तियों का नाश करने वाला भी माना जाता है।

सांस्कृतिक रूप से, त्रिलोकिनाथ मंदिर सामुदायिक जीवन और परंपरा का एक जीवंत केंद्र है। यह मंडी की शैव विरासत का प्रतीक है, जो पीढ़ियों से एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आधार रहा है। मंदिर से जुड़ी कहानियां–पौराणिक कथाएं, दिव्य चमत्कारों की कहानियां–मौखिक परंपराओं, भजनों (भक्ति गीतों), लोकगीतों और देव-डोली जैसे अनुष्ठानों के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही हैं, जिसमें देवता की मूर्ति को एक औपचारिक जुलूस में पूरे गांव में ले जाया जाता है। ऐसे अनुष्ठान स्थानीय निवासियों के बीच एकता, निरंतरता और साझा पहचान की भावना को बढ़ावा देते हैं। मंदिर के त्यौहार और अनुष्ठान जीवंत आयोजन होते हैं, जो संगीत, नृत्य और सामूहिक प्रार्थनाओं से परिपूर्ण होते हैं, और इस क्षेत्र में व्याप्त भक्ति की आनंदमय भावना को दर्शाते हैं। इन परंपराओं के माध्यम से, मंदिर न केवल धार्मिक प्रथाओं को संरक्षित करता है, बल्कि सामाजिक बंधनों और सांस्कृतिक गौरव को भी पोषित करता है।

सिमसा माता मंदिर: हिमाचल प्रदेश के सुरम्य मंडी जिले के शांत गांव सिमस में स्थित सिमसा माता मंदिर अनगिनत भक्तों के लिए आस्था और भक्ति का प्रतीक है। इस पूजनीय धार्मिक स्थल का इतिहास सदियों पुराना है और यह क्षेत्र की आध्यात्मिक परंपराओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। मंदिर की स्थापना कई वर्ष पूर्व एक धर्मनिष्ठ और दूरदर्शी भक्त तोबा सिंह ने की थी, जिनकी अटूट आस्था और समर्पण ने एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल की नींव रखी। सदियों से, सिमसा माता मंदिर का महत्व बढ़ता गया है और यह क्षेत्र और उससे परे के भक्तों को आकर्षित करता है, जो दुर्गा के शक्तिशाली और दयालु रूप, देवी शारदा के दिव्य आशीर्वाद की कामना करते हैं।"मंदिर का एक सबसे अनूठा और आकर्षक पहलू इसकी 'सालिंदरा' या स्वप्न-दर्शन की परंपरा

है, जो विशेष रूप से नवरात्रि के त्योहार के दौरान प्रचलित है।"[23] इस प्रथा में महिलाएं मंदिर परिसर में सोती हैं, इस उम्मीद में कि उन्हें भविष्य में होने वाली संतान के बारे में संदेश देने वाले दिव्य सपने दिखाई देंगे। भक्तों का मानना है कि सोते समय उन्हें ऐसे दर्शन होते हैं जिनमें प्रतीकात्मक वस्तुएं–जैसे फल या अन्य वस्तुएं–दिखाई देती हैं, जो बच्चे के लिंग या अस्तित्व का संकेत देती हैं। उदाहरण के लिए, अमरूद या भिंडी का सपना देखना शुभ माना जाता है, जो पुत्र या पुत्री के जन्म का प्रतीक है। इसके विपरीत, धातु की वस्तुओं या पत्थरों से जुड़े सपने इस बात का संकेत माने जाते हैं कि महिला संतानहीन रह सकती है। इस पवित्र अनुष्ठान के कारण मंदिर को स्नेहपूर्वक 'संतान दात्री' कहा जाता है, जिसका अर्थ है 'बच्चों की माता' जो संतान की चाह रखने वाली महिलाओं के लिए एक पवित्र स्थान के रूप में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करता है। इसे देवी की सर्वशक्तिमानता और मानवीय मामलों में हस्तक्षेप करने की उनकी क्षमता का प्रमाण मानते हैं।

बाबा कमलाहिया: हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले की सुरम्य धर्मपुर तहसील में स्थित बाबा कमलाहिया एक पूजनीय और ऐतिहासिक स्थल है। यह प्राचीन मंदिर आध्यात्मिक भक्ति, सांस्कृतिक विरासत और क्षेत्र के समृद्ध इतिहास का प्रमाण है। "कमलाहगढ़ किले की मजबूत दीवारों के भीतर स्थित यह मंदिर भक्तों और स्थानीय समुदाय के दिलों में विशेष स्थान रखता है। यह मंदिर बाबा कमलाहिया को समर्पित है, जो महान गुरु गोरखनाथ के एक पूजनीय शिष्य थे, जिनकी शिक्षाएं और आध्यात्मिक विरासत आज भी अनगिनत अनुयायियों को प्रेरित करती हैं।"[24]

बाबा कमलाहिया मूल रूप से अमरनाथ धाम के निवासी थे, जो अपनी आध्यात्मिक महत्ता के लिए प्रसिद्ध एक पवित्र स्थल है। एक समर्पित तपस्वी और आध्यात्मिक साधक के रूप में, उन्होंने कांगड़ा की ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों में कठोर तपस्या और ध्यान किया। वर्षों की तपस्या और आध्यात्मिक साधना के बाद, उन्होंने कमलाहगढ़ के शांत और रणनीतिक पठार पर अपना आश्रम स्थापित किया। यह स्थान, अपने मनोरम दृश्यों और शांत वातावरण के साथ, एक आध्यात्मिक अभयारण्य बन गया जहाँ बाबा कमलाहिया ने ध्यान किया, उपदेश दिया और शिष्यों का मार्गदर्शन किया। समय के साथ, उनकी आध्यात्मिक शक्ति और करुणामय स्वभाव ने उन्हें स्थानीय लोगों और तीर्थयात्रियों के बीच अपार श्रद्धा का पात्र बना दिया।

अपने धार्मिक महत्व के अलावा, मंदिर ने एक सांस्कृतिक केंद्र के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है,

जो स्थानीय लोककथाओं और परंपराओं को संरक्षित करता है। ऋषि अनी मांडव जैसे संतों की कथाएँ स्थानीय कथाओं में गहराई से समाई हुई हैं, जो इस क्षेत्र के आध्यात्मिक ताने-बाने को समृद्ध करती हैं। यह स्थान विभिन्न त्योहारों, मेलों और आध्यात्मिक सभाओं का भी आयोजन करता है जो सामुदायिक बंधनों को मजबूत करते हैं और सदियों पुरानी परंपराओं को कायम रखते हैं।

माता जालपा देवी: हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले के सकरैण धार, धर्मपुर में स्थित माता जालपा देवी मंदिर एक अत्यंत पूजनीय और ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है, जिसे स्थानीय समुदाय और पर्यटक समान रूप से सम्मान देते हैं। इसकी उत्पत्ति एक आकर्षक किंवदंती से जुड़ी है जो पीढ़ियों से चली आ रही है, और मंदिर के आध्यात्मिक आकर्षण को और बढ़ाती है। स्थानीय लोककथा के अनुसार, "मंदिर की कहानी एक घने बांस के जंगल में शुरू होती है, माना जाता है कि एक स्थानीय व्यक्ति कुआं खोदते समय जमीन से खून बहने और फिर एक पत्थर की पिंडी (शिला) से खून निकलते देख वहां आया, उत्सुक और जिज्ञासु होकर उसने आगे जांच करने का फैसला किया। उसे आश्चर्य हुआ जब उसने जमीन के नीचे छिपी एक रहस्यमय पत्थर की मूर्ति

को खोजा, जिससे एक दिव्य आभा निकल रही थी। इसके पवित्र महत्व को पहचानते हुए, ग्रामीणों ने इस पूजनीय मूर्ति को कुलजा माता, क्षेत्रीय कुलदेवी के रूप में स्थापित करने का निर्णय लिया और इसके चारों ओर एक छोटा सा मंदिर बनाया। समय के साथ, यह साधारण शुरुआत एक पूर्ण विकसित मंदिर में तब्दील हो गई, जो अब अनगिनत भक्तों को दिव्य आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आकर्षित करता है।"[25]

माता जालपा देवी मंदिर अपने मूल स्वरूप से आगे बढ़कर स्थानीय धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक ताने-बाने का अभिन्न अंग बन गया है। इसे व्यापक रूप से सिद्धपीठ माना जाता है, एक पवित्र स्थान जहाँ भक्त जीवन की विभिन्न घटनाओं, विशेष रूप से विवाह, स्वास्थ्य और समृद्धि के लिए आशीर्वाद प्राप्त करने आते हैं। कई भक्त मंदिर में 'पांती' (प्रसाद) अर्पित करने आते हैं, विशेष रूप से अशुभ समय में या देवी से विशेष कृपा प्राप्त करने के लिए। मई में आयोजित होने वाले वार्षिक उत्सवों के दौरान मंदिर का महत्व और भी बढ़ जाता है, जब पूरा क्षेत्र जीवंत उत्सवों से गुलजार हो उठता है। इन उत्सवों में भव्य मेले, भंडारे (सामुदायिक भोज) और जागरण की जीवंत परंपरा शामिल है रात भर चलने वाले भक्ति गीत और प्रार्थनाएँ जो हिमाचल प्रदेश और आसपास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित करती हैं। पूरा समुदाय भक्ति में एकजुट होता है, इन उत्साहपूर्ण आयोजनों के माध्यम से अपनी आस्था और सांस्कृतिक विरासत का जश्न मनाता है, जिससे माता जालपा देवी मंदिर न केवल एक पूजा स्थल बल्कि स्थानीय परंपरा और सांप्रदायिक सद्भाव का एक जीवंत केंद्र बन जाता है।

महामृत्युंजय मंदिर: मंडी में स्थित महामृत्युंजय मंदिर जिसे अक्सर प्यार से 'छोटी काशी' कहा जाता है, आध्यात्मिक भक्ति और प्राचीन परंपरा का एक अद्भुत उदाहरण है। 16वीं शताब्दी में स्थापित यह पवित्र स्थल भारत और विदेश के भक्तों के दिलों में एक विशेष स्थान रखता है। कामेश्वर महादेव मंदिर के निकट स्थित होने के कारण यह मंडी के आध्यात्मिक परिदृश्य के केंद्र में है, जिससे दिव्य आशीर्वाद चाहने वालों के लिए यहाँ पहुँचना आसान हो जाता है। शिवलिंग वाले कई शिव-समर्थक मंदिरों के विपरीत, "महामृत्युंजय मंदिर अपनी अनूठी पूजा पद्धति के लिए जाना जाता है: यहाँ शिव की प्रतिमा की पूजा की जाती है, यह दुनिया का एकमात्र ऐसा मंदिर है जहाँ शिव की मूर्ति रूप में पूजा होती है, जो सामान्य शिवलिंग पूजा से भिन्न है जो कि दुर्लभ और अत्यंत पूजनीय है।"[26]

इस मंदिर की सबसे आश्चर्यजनक और प्रसिद्ध विशेषताओं में से एक है शिव के चेहरे का दिन में पाँच बार रूप बदलना। भक्तों का मानना है कि यह गतिशील प्रदर्शन भगवान शिव की दिव्य शक्ति और सर्वव्यापकता का प्रतीक है, जो इसे देखने वाले सभी को मंत्रमुग्ध कर देता है। चेहरे का यह रूपांतरण एक दिव्य आशीर्वाद के रूप में देखा जाता है, जो इस विश्वास को मजबूत करता है कि इस मंदिर में शिव की उपस्थिति जीवंत है और वे अपने भक्तों की प्रार्थनाओं और आवश्यकताओं का उत्तर देते हैं। अनेक लोग अकाल मृत्यु से सुरक्षा और दीर्घायु, स्वस्थ जीवन की कामना के लिए यहां आते हैं। भक्त विशेष अनुष्ठान और प्रार्थनाएं करते हैं, विशेष रूप से शिव के महामृत्युंजय रूप पर केंद्रित–जो मृत्यु पर विजय और अमरता प्रदान करने से संबंधित अवतार हैं।

ग्राम एवं कुल देवता: इन प्रमुख देवी-देवताओं के अतिरिक्त मंडी जिले में असंख्य ग्राम-देवता और कुल-देवता पूजे जाते हैं, जिनकी मान्यता स्थानीय समुदायों तक सीमित होती है। ये देवता सामाजिक अनुशासन, परंपरा-पालन और सामुदायिक एकता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मंडी जिले की देव-परंपरा केवल आस्था-प्रधान धार्मिक व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह एक सुव्यवस्थित सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था के रूप में विकसित हुई है। इसे स्थानीय स्तर पर देव व्यवस्था कहा जाता है, जिसके अंतर्गत देवताओं, पुजारियों, कारदारों, गुरों (देव माध्यमों) तथा समुदाय के अन्य सदस्यों की स्पष्ट भूमिकाएँ निर्धारित होती हैं। यह व्यवस्था पारंपरिक हिमालयी समाज में शासन, न्याय और सामाजिक नियंत्रण का वैकल्पिक ढाँचा प्रस्तुत करती है। "देव व्यवस्था के केंद्र में लोकदेवता होते हैं, जिन्हें क्षेत्र, ग्राम या कुल का संरक्षक माना जाता है।"[27]

देवता की इच्छा और आदेश को व्यक्त करने के लिए गुर या देव माध्यम की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। गुर को देवता का प्रतिनिधि माना जाता है, जो देव-वाणी के माध्यम से समाज को दिशा-निर्देश देता है। इसके अतिरिक्त कारदार**,** पूजारी और कोषाध्यक्ष जैसे पदाधिकारी देव-संस्था के प्रशासनिक कार्यों का संचालन करते हैं। ये पद वंशानुगत अथवा सामुदायिक सहमति से निर्धारित होते हैं। इस प्रकार देव व्यवस्था धार्मिक आस्था और सामाजिक संगठन का संयुक्त रूप है। देव सभा मंडी जिले की देव-व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण और सक्रिय अंग है। देव सभा एक सामूहिक धार्मिक-सामाजिक आयोजन होता है, जिसमें विभिन्न ग्रामों या क्षेत्रों के देवता अपने-अपने रथों और दलों के साथ एकत्रित होते हैं। इन सभाओं का उद्देश्य केवल पूजा-अर्चना नहीं, बल्कि सामाजिक समस्याओं पर विचार-विमर्श, विवादों का निपटारा और सामुदायिक निर्णय लेना भी होता है। टी. सी. शर्मा के अनुसार, "देव सभाएँ पारंपरिक हिमालयी समाज की 'लोक अदालत' के समान कार्य करती थीं।"[28]भूमि विवाद, सामाजिक अपराध,प्राकृतिक आपदाएँ और महामारी जैसे विषयों पर देवताओं के माध्यम से निर्णय लिए जाते थे, जिन्हें समाज सर्वसम्मति से स्वीकार करता था।

देव सभा का आयोजन सामान्यतः विशेष अवसरों–जैसे वार्षिक उत्सव, संकट काल या सामूहिक अनुष्ठान–पर किया जाता है। इसमें देव-रथों की उपस्थिति, देव-नृत्य, गुर द्वारा देव-वाणी और सामुदायिक सहभागिता प्रमुख तत्व होते हैं। देव-वाणी को देवता की आज्ञा माना जाता है और उसका पालन सामाजिक कर्तव्य समझा जाता है। ओ. सी. हांडा का मत है "कि देव सभाएँ लोकसंस्कृति के जीवंत मंच हैं, जहाँ धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक तत्व एक साथ प्रकट होते हैं।"[29] इन सभाओं के माध्यम से परंपरा, इतिहास और सामूहिक स्मृति का संरक्षण होता है।

मंडी जिले की देव-परंपरा को केवल धार्मिक आस्था के रूप में नहीं, बल्कि एक सशक्त सामाजिक और राजनीतिक संस्था के रूप में समझा जाना आवश्यक है। पारंपरिक हिमालयी समाज में, जहाँ औपचारिक राज्य व्यवस्था सीमित थी, वहाँ देवताओं ने सामाजिक नियंत्रण, न्याय और प्रशासनिक मार्गदर्शन की भूमिका निभाई। देव-परंपरा ने मंडी जिले की सामाजिक संरचना और राजनीतिक निर्णय-प्रक्रिया को गहराई से प्रभावित किया है।

उपसंहार:

मंडी जिले की लोकधार्मिक संस्कृति एक समृद्ध और बहुआयामी प्रणाली प्रस्तुत करती है, जिसमें देव परंपरा, मौखिक परंपराएँ, गाथाएँ, अनुष्ठान, उत्सव, देवनृत्य और लोककला शामिल हैं। यह परंपरा न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन की दिशा निर्धारित करती है, बल्कि सामाजिक संगठन, सामुदायिक एकता और लोक समृद्धि के लिए भी आधार प्रदान करती है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि देवता केवल धार्मिक प्रतीक नहीं हैं, वे सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। मध्यकालीन मंडी रियासत में देवता और देव-संस्थाएँ शासन, न्याय और सामुदायिक निर्णयों में केंद्रीय भूमिका निभाती थीं।

मौखिक परंपराएँ और लोकगाथाएँ समाज की सांस्कृतिक स्मृति का आधार हैं। ये कथाएँ, लोकगीत और नृत्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी सामाजिक मूल्य, वीरता, न्याय और धार्मिक आस्था का प्रचार करती हैं। इसके साथ ही, देव-संबंधित उत्सव और अनुष्ठान सामाजिक समरसता, आर्थिक गतिविधियाँ और सांस्कृतिक शिक्षा का माध्यम भी हैं। यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मंडी जिले की देव परंपरा सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक समरसता और लोक समृद्धि का अभिन्न अंग है। यह परंपरा आज भी समाज के सामूहिक चेतना, लोकस्मृति और सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आधुनिक प्रशासनिक ढाँचों के बावजूद, देव-परंपरा और लोकसाहित्य समाज के लिए प्रेरणा, नैतिक मार्गदर्शन और सांस्कृतिक शिक्षा का स्रोत बनी हुई है।

इस प्रकार मंडी जिले की देव-परंपरा, मौखिक परंपराएँ और लोककला हिमालयी लोकधार्मिक जीवन की एक जीवंत और समृद्ध विरासत का प्रतिनिधित्व करती हैं।

---

[1] बी. के. शर्मा, Himachal Pradesh: History, Culture and Economy (प्रकाश बुक डिपो, शिमला 1990), पृ. 165 ।

[2] रोमिला थापर, Early India: From the Origins to AD 1300 (पेंगुइन, नई दिल्ली, 2002), पृ. 315 ।

[3] डी. एन. मजूमदार, Folk Culture of India (किताब महल, इलाहाबाद 1958), पृ. 12 ।

[4] Bronislaw Malinowski, Magic, Science and Religion (Beacon Press, Boston, 1948), p. 35 ।

[5] M.N. Srinivas, Religion and Society among the Co-orgs of South India (Clarendon Press, Oxford,1952), p.67 ।

[6] Clifford Geertz, The Interpretation of Cultures (Basic Books, New York, 1973), p. 90 ।

[7] जे. हचिन्सन एवं जे. फोगेल, History of the Punjab Hill States, Vol. I (लो मैन्स, ग्रीन एंड कंपनी, दिल्ली, 1933), पृ. 22 ।

[8] सुरजीत सिंह, हिमाचल का भूगोल (भाषा अकादमी शिमला हिमाचल प्रदेश, 2003 पृ .42 ।

[9] J.Hutchison & J.Ph.Vogel, History of the Punjab Hill States,Vol.I (Low Price Publications, Delhi,1933), pp.18 ।

[10] बी. के. शर्मा, Himachal Pradesh: History, Culture and Economy (प्रकाश बुक डिपो, शिमला 1990), पृ. 172 ।

[11] डी. एन. मजूमदार, Folk Culture of India (किताब महल, इलाहाबाद, 1958), पृ. -198 ।

[12] M.N. Srinivas, Religion and Society among the Co-orgs of South India (Clarendon Press, Oxford,1952), p.30 ।

[13]ओ. सी. हांडा, Temple Architecture of Himachal Pradesh (इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली, 2001), पृ. 106 ।

[14] बी. के. शर्मा, Himachal Pradesh: History, Culture and Economy (प्रकाश बुक डिपो, शिमला, 1990), पृ. 176 ।

[15] बी. के. शर्मा,.Himachal Pradesh: History, Culture and Economy), (प्रकाश बुक डिपो, शिमला, 1990) पृ .182।

[16] R. Sharma Himachal Pradesh, Folk Deities and Sacred Sites, Academy of Arts & Culture, Shimla Himachal
Pradesh पृ.78 ।

[17] बी.एन.शर्मा, तंत्र और शक्ति उपासना, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी, 2003 , पृ.170 ।

[18] बी.के. शर्मा, Himachal Pradesh,History ,Culture and Economy (प्रकाश बुक डिपो ,शिमला ,1990), पृ .170 ।

[19] एस.आर.हरनोट ,Himachal Ke Mandir aur Unse Judi Lok-Kathiyan, Academy of Arts & Culture, Shimla Himachal
Pradesh 1991, पृ . 210 ।

[20] आर.सी.डोगरा,Himachal Pradesh, History-Culture and Economy(इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी,शिमला 1990),पृ.172

[21] बी. के. शर्मा Himachal Pradesh: History, Culture and Economy (प्रकाश बुक डिपो,शिमला 1990)पृ. 173 ।

[22] रामचंद्र शास्त्री, हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शिवालय और उनकी परंपराएँ (हिमालय प्रकाशन,शिमला 2005), पृ .72 ।

[23] आर.शर्मा, हिमाचल प्रदेश के लोकदेव और उनकी परंपराएँ (हिमाचल पब्लिकेशन, शिमला 2005), पृ .142 ।

[24] बी. के. शर्मा Himachal Pradesh: History, Culture and Economy (प्रकाश बुक डिपो,शिमला 1990), पृ .173 ।

[25] बी. के. शर्मा Himachal Pradesh: History, Culture and Economy (प्रकाश बुक डिपो,शिमला,1990), पृ .182 ।

[26] बी.के.शर्मा, Himachal Pradesh: History, Culture and Economy (प्रकाश बुक डिपो,शिमला ,1990), पृ .214 ।

[27] टी.सी.शर्मा, Folk Religion and Culture of Himachal Pradesh (इंडियन पब्लिकेशन,नई दिल्ली,1997), पृ .92 ।

[28] टी.सी शर्मा,Himachal Pradesh: History and Culture (इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस स्टडी,शिमला 1987), पृ . 214 ।

[29] O.C.Handa, Folk Religion and Culture of Himachal Pradesh (इंदूस पब्लिशिंग कंपनी,नई दिल्ली1994), पृ . 115 ।